हिन्दी–अनुशीलन

भारतीय हिन्दी परिषद् का त्रैमासिक मुख–पत्र

वर्ष 57 जुलाई–दिसम्बर, 2015 संयुक्तांक 3–4

परामर्शदाता

प्रो० कमल किशोर गोयनका
प्रो० सुरेन्द्र दुबे
प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित

प्रधान संपादक

प्रो० नंदकिशोर पाण्डेय

संपादक

डॉ० नरेन्द्र मिश्र

संपादन सहयोग

डॉ० निर्मला अग्रवाल
प्रो० मीरा दीक्षित

भारतीय हिन्दी परिषद्, प्रयाग

ISSN : 2249-930X

प्रकाशक : डॉ0 निर्मला अग्रवाल, प्रबंधमंत्री, भारतीय हिन्दी परिषद्
हिन्दी–विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
Website- www.bhartiyahindiparishad.com
Email- hindianusheelan@gmail.com
मूल्य : रु0 100.00, संस्था के लिए रु0 120.00

अक्षर संयोजन : जितेन्द्र कुमार मिश्र, मो0– 09452365928
मुद्रक : नागरी प्रेस, अलोपीबाग, इलाहाबाद

अनुक्रम

ान संपादक की कलम से........ 5

संपादक की कलम से........ 7

जयपुर अधिवेशन (2015) की रिपोर्ट 11

1. हिन्दी का समकालीन परिदृश्य — *डॉ0 चन्द्रकान्त तिवारी* 13

2. ज्ञेयता की दुर्लभ मिसाल : अज्ञेय — *डॉ0 प्रमोद कुमार तिवारी* 23

3. महादेवी वर्मा के चिन्तन के आलोक में – 'स्त्री' — *डॉ0 निर्मला अग्रवाल* 31

4. पितृसत्तात्मक वर्चस्व और छिन्नमस्ता के स्त्री चरित्र — *डॉ0 संजीव कुमार जैन* 37

5. विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी के बढ़ते कदम — *डॉ0 कैलाश कौशल* 49

6. हिन्दी साहित्य के विकास में राजस्थान का योगदान — *प्रो0 मीरा दीक्षित* 55

7. हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के विविध आयाम — *डॉ0 नरेन्द्र मिश्र* 59

8. वैश्वीकरण और नई सदी का साहित्य — *डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह* 65

9. कस्बाई स्त्री आकांक्षाओं का दस्तावेज़ — *डॉ0 विवेकानन्द उपाध्याय* 73

10. समकालीन हिन्दी कविता में हास्य एवं व्यंग्य (हारे को हरिनाम के विशेष संदर्भ में) — *डॉ0 कामिनी ओझा* 80

11. समकालीन हिन्दी कविता में दलित प्रतिरोध के स्वर — *डॉ0 विमलेश शर्मा* 85

12. रामधारी सिंह 'दिनकर' के पत्रों की कविता — *डॉ0 अश्विनी कुमार शुक्ल* 91

13. संत दादूदयाल के साहित्य में सद्भाव एवं सहभाव — *डॉ0 नवीन नन्दवाना* 100

14. साझी विरासत के कवि नज़ीर — *डॉ0 सत्यकेतु सांकृत* 105

15. बाल साहित्य की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता 116
डॉ0 बलजीत कुमार श्रीवास्तव

16. अस्तित्व की अस्मिता को आलोकित करता कठगुलाब 122
डॉ0 मीता शर्मा

17. आदिवासी स्त्री संदर्भ : नगाड़े की तरह बजते हैं शब्द 129
डॉ0 किरण शर्मा

18. रेणु की राह 139
डॉ0 राजेश श्रीवास्तव

19. बाजारवाद और समकालीन हिन्दी काव्य साहित्य का प्रतिरोधी स्वर 144
डॉ0 मलखान सिंह

20. हिन्दी और उसकी बोलियों का अंतर्संबंध 151
डॉ0 राकेश नारायण द्विवेदी

21. हिन्दी भाषा का अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व 156
डॉ0 धीरेन्द्र शुक्ल

22. डॉ0 श्यामसुंदर दुबे के ललित निबन्धों में ग्राम्यबोध 162
डॉ0 अम्बिका प्रसाद

23. सुभद्रा कुमारी चौहान का महत्त्व 167
डॉ0 रंजना उपाध्याय

24. मणिपुरी लोकसाहित्य : परिदृश्य एवं परिप्रेक्ष्य 173
डॉ0 अखिलेश कुमार शंखधर

25. मन्नू भण्डारी की कहानियों में 'स्त्री' 176
डॉ0 नन्दीषा मिश्र

26. खड़ी बोली रामकाव्य में जीवन मूल्य 181
डॉ0 सुरेश पति त्रिपाठी

27. सूचना प्रौद्योगिकी और हिन्दी 186
डॉ0 सोनू अन्नपूर्णा

28. सुमित्रानंदन पंत : स्वर्गिक शिखरों के वैभव का कवि 190
डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय

29. हरिवंशराय बच्चन का काव्य : रोमानियत से यथार्थ तक 196
डॉ0 अवधेश कुमार

30. हिन्दी सिनेमा में अभिव्यक्त यथार्थ और हिन्दी साहित्य 202
डॉ0 अमरेन्द्र त्रिपाठी

31. जीवनाधार खोने का अर्थ 209
श्रीधर पराडकर

32. पं0 सोहनलाल द्विवेदी के बालगीतों में राष्ट्रीय उद्‌बोधन 216
डॉ0 आदर्श मिश्र

33. पड़ा रहन दो म्यान : कबीर की कविता 232
प्रो0 वशिष्ठ अनूप

34. शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास 'शैलूष' में आदिवासी विमर्श 238
डॉ0 उमेश कुमार शुक्ल

सुभद्रा कुमारी चौहान का महत्त्व

डॉ0 रंजना उपाध्याय

स्वतंत्रता आन्दोलन का दौर अनेक साहित्यिक आन्दोलनों का भी युग रहा है और इन सभी काव्यान्दोलनों में देश की तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक दशा, उससे उत्पन्न होने वाली स्वातंत्र्य–चेतना एवं उस चेतना के प्रभाव की प्रत्यक्ष या परोक्ष झलक दिखाई देती है। इस स्वतंत्रता आन्दोलन के दौर में कवियों के साथ–ही–साथ कवयित्रियाँ भी अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराती हैं। महिला रचनाकारों का कोई बहुत बड़ा दल तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित भले ही न रहा हो, लेकिन जो भी रचना–कर्म से जुड़ी थीं, उन्होंने अपने–अपने स्तरों पर देश–प्रेम की भावना को जगाने, अपनी जड़ताओं से बाहर निकलने, अपनी रूढ़ परम्पराओं को छोड़ने की प्रेरणा देने का रचनात्मक प्रयास किया। अनेक ऐसी लेखिकाएँ रहीं जो अपनी कविताओं, अपने लेखों, अपनी कहानियों के माध्यम से अपने रचना–कर्म को सार्थक बनाया। तत्कालीन समय में जबकि हमारा भारतीय समाज अनेकानेक जड़ परम्पराओं से जकड़ा हुआ था, नारी–शिक्षा का अभाव था, पर्दा–प्रथा की प्रधानता थी, नारी का घर की चहारदीवारी में बंद रहना ही शायद उसकी नियति थी तब भी अनेक महिला लेखिकाओं ने समय एवं समाज की परिस्थितियों से जन्म लेने वाली अपने भीतर की आग को किसी–न–किसी रूप में अभिव्यक्त करने की कोशिश की। कुछ को पहचान मिली तो कुछ को नहीं, लेकिन साहित्य के इतिहास में उन सबका अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि जन–चेतना को जन्म देने, दासता से मुक्ति हेतु प्रेरित करने, अपने बनाये हुए जड़ बंधनों से मुक्त होने की आकांक्षा जगाने में इन सभी की रचनाएँ निश्चित तौर पर महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं। महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, विद्यावती कोकिल, तोरन देवी शुक्ल 'लली', तारादेवी पाण्डेय, रामेश्वरी देवी 'चकोरी' जैसे अनेक नाम हैं, जिन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी से जनमन को आंदोलित किया तथा राष्ट्रीय मुक्ति हेतु आह्वानपरक कविताओं का सृजन किया।

इन सभी महिला कवयित्रियों के बीच एक ऐसी भी कवयित्री रही हैं, जिन्होंने अपने गीतों से राष्ट्रीय आन्दोलन के संघर्षयुक्त समय में जनता में गहरी प्रेरणा, उत्साह तथा नई स्फूर्ति जगाई, और वह नाम है– गांधीवादी अहिंसा तथा बलिदान की भावना से ओतप्रोत, गहरी संवेदना की धनी सुभद्रा कुमारी चौहान। सुभद्रा कुमारी चौहान का स्वर उस दौर की महिला लेखिकाओं के बीच सबसे अलग था। इसका सबसे बड़ा कारण यह भी रहा कि सुभद्रा जी का व्यक्तित्व जीवन एवं रचना दोनों क्षेत्रों में क्रांति की पहल करता दिखाई देता है। सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक जीवन को एक करके चलने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने वाली सक्रिय महिला थीं। राष्ट्रीय

आन्दोलन से प्रत्यक्षतः जुड़े होने के कारण उन्होंने सामाजिक एवं राजनीतिक यथार्थ को सजीव रूप में चित्रित किया। हम सब यह जानते हैं कि 'झाँसी की रानी' सम्बन्धी उनका गीत लोकगीतों की भाँति जन–जन का प्रिय गीत बन गया था। ठीक इसी तरह 'वीरों का कैसा हो बसंत' गीत भी अपनी उदात्त राष्ट्रीय भावना के चलते उल्लेखनीय बन गया, लेकिन सभी गीतों के मूल में गांधीवादी अहिंसा की प्रेरणा स्पष्टतः देखी जा सकती है। सच तो यह है कि सुभद्रा जी ने देश के वीर नायकों की प्रशंसा में जो गीत लिखे, वे गीत जागरण के गीत बन गए, प्रेरणा के गीत बन गये। चाहे गांधी के प्रति लिखा गीत हो या महारानी लक्ष्मीबाई के प्रति, सभी में देशभक्ति की भावना अन्तर्निहित दिखाई देती है। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौर में विशेषकर राष्ट्रीय काव्यधारा की कविताओं की एक उल्लेखनीय विशेषता रही है – शहीदों का गुणगान करना। 'गांधी जी के प्रति' लिखी कविता को हम इसी परिप्रेक्ष्य में देख सकते हैं। महारानी लक्ष्मीबाई का बलिदान तो मानो उनके अंग–अंग में रच–बस गया था। जिनके लिए उनका कहना था – 'तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी।'[1]

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौर में लिखे जाने वाले राष्ट्रीय काव्यधारा के भी दो पक्ष रहे हैं, एक पक्ष उग्रनीतियों के समर्थकों का और दूसरा नरम नीतियों के समर्थकों का। सिद्धान्त और व्यवहार दोनों में गांधीवादी विचारों से अनुप्राणित सुभद्रा जी यों तो नरम नीतियों की समर्थक थीं, लेकिन कविता में वे दोनों पक्षों का संस्पर्श करती दिखाई देती हैं। यही कारण है कि जहाँ वे 'झाँसी की रानी', 'विजयी मयूर', 'जलियाँवाला बाग में बसंत', 'विजयादशमी', 'विदा', 'स्वदेश के प्रति' जैसी राष्ट्रीय चेतना से युक्त, क्रांति की भावना को जगाने वाली, उद्‌बोधनात्मक कविताएँ लिखती हैं वहीं वे रागात्मक संवेदना से युक्त 'फूल के प्रति', 'मुरझाया फूल', 'चलते समय', 'ठुकरा दो या प्यार करो', 'आहत की अभिलाषा' जैसी कविताओं का भी सृजन करती हैं। यह सामंजस्यपूर्ण दृष्टि ही उन्हें अपने समकालीनों में सबसे अलग खड़ा करती है।

सच तो यह है कि हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा को गति देने में तथा सुषुप्त जनमानस को झंकृत करने में सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को केन्द्र में रखकर जो रचना प्रस्तुत की, उसने जन–जन के हृदय को आन्दोलित कर दिया। उस कविता के एक–एक शब्द में जो राष्ट्रीयता की भावना थी, प्राणोत्सर्ग की चेतना थी और मिटकर भी नया पथ दिखला जाने की जो अदम्य आकांक्षा थी उससे जनमानस सहज ही प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। सुभद्रा जी का मानना है कि झाँसी की रानी के बलिदान को मिटाया या भुलाया नहीं जा सकता, क्योंकि उन्होंने सिर्फ अपना प्राणोत्सर्ग ही नहीं किया बल्कि उस बलिदान के माध्यम से वे जन–समुदाय में नई चेतना जाग्रत कर गईं। सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्र–भक्तिपरक यह रचना पढ़ने–सुनने वालों के हृदय में राष्ट्रीय चेतना और बलिदान की भावना को जाग्रत करती है। इस कविता में जो ओज है, वह स्वयं ही प्रेरणा बन जाता है। सुभद्रा जी लक्ष्मीबाई को सीख देने वाली स्वतंत्रता की नारी के रूप में चित्रित करती हैं– उन्हें लक्ष्मी, दुर्गा और स्वयं वीरता की अवतार के रूप में चित्रित करती हैं। उन्हीं के शब्दों में –

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार।

लक्ष्मीबाई के बलिदान को रेखांकित करते हुए वे कहती हैं –

रानी गयी सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी, बन स्वतंत्रता नारी थी।[3]

और यह भी कि– 'दिखा गयी पथ सिखा गयी, हमको जो सीख सिखानी थी।'[4]

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी देशभक्तिपूर्ण कविताओं के माध्यम से जन–जन को उद्वेलित किया तथा शत्रुओं से सदा लोहा लेने के लिए राष्ट्र की तरुणाई का आह्वान किया। 'मत जाओ' शीर्षक कविता में तो वे भगवान तक का आह्वान करती हैं और उनके लिए भगवान वह अदृश्य भगवान नहीं था बल्कि वे तो जन–जन के बीच भगवान के दर्शन करती थीं। वे आह्वान के स्वर में कहती हैं –

आशा–वेलि स्वदेश–भूमि की, यों न हाय! मुरझाने दो।
लौटो, लौटो भारत के धन, उसे जरा हरियाने दो।[5]

'मुकुल', 'उमंग' तथा 'त्रिधारा' की कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी कविताओं से राष्ट्रीय जीवन में अद्भुत चेतना का संचार करती हैं। उनके काव्य का एक–एक शब्द राष्ट्रीयता के रंग में रंगा हुआ है। 'वीरों का कैसा हो वसंत' शीर्षक कविता राष्ट्र की तरुणाई को जगाने का कार्य करती है। 'गलबाहें हों या हों कृपाण/चल चितवन हो या धनुष–बाण' जैसे सवालों के बीच वीरों का वसंत कैसा होना चाहिए ? इस पर विचार करती हैं और आह्वान करती हैं उस तरुणाई का, जो देश को गुलामी से मुक्ति दिलाने में समर्थ है। सुभद्रा जी की कविताओं में दृढ़ आत्म–विश्वास झलकता है। भारतीय जीवनादर्श की झलक मिलती है। 'स्वागत' शीर्षक कविता में वे पूरे विश्वास और स्वाभिमान के साथ यह घोषित करती हैं कि –

हमें नहीं भय संगीनों का, चमक रहीं जो उनके हाथ।
जरा नहीं डर उन तोपों का, गरज रहीं जो बल के साथ।।
ढीठ सिपाही की हथकड़ियाँ, दमन नीति के वे कानून।
डरा नहीं सकते हैं हमको, यदपि बहावें प्रतिदिन खून।।[6]

स्वतंत्रता–आन्दोलन के संघर्ष को वे राम–रावण के युद्ध के रूप में चित्रित करती हैं, पाप–पुण्य के युद्ध के रूप में उसे देखती हैं और महिलाओं के योगदान को भी महत्त्वपूर्ण रूप में स्थापित करती हैं। 'विजयादशमी' शीर्षक कविता में वे कहती हैं –

सबल पुरुष यदि भीरु बनें, तो हमको दे वरदान सखी!
अबलायें उठ पड़ें देश में, करें युद्ध घमसान सखी!![7]

और कवयित्री को यह भी विश्वास है कि यह पाप का जो साम्राज्य आज हमारे देश में घर करके बैठा हुआ है वह ध्वस्त होगा और भारत माता के भाल पर स्वतंत्रता का मुकुट अवश्य लगेगा और अंतिम विजय हमारी ही होगी। वे विश्वास के स्वर में कहती हैं–

पापों के गढ़ टूट पड़ेंगे, रहना तुम तैयार सखी!
विजये! हम–तुम मिलकर लेंगी, अपनी माँ का प्यार सखी!![8]

सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रीयता उनके सम्पूर्ण साहित्य–सृजन में झलकती है। गुलामी की अँधेरी निशा से मुक्ति पाने की बेचैनी उनके सम्पूर्ण काव्य में मिलती है। रचनाकार की रचना के पीछे कोई–न–कोई कारण होता है, उसके सृजन का कोई–न–कोई प्रयोजन होता है। सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्य–साधना के पीछे देश–प्रेम की भावना तथा त्याग एवं बलिदान की आकांक्षा रही है। 'मुकुल' और 'त्रिधारा' की अधिकांश कविताएँ राष्ट्रीय चेतना से समन्वित हैं। 'झाँसी की रानी' के रूप में तो लक्ष्मीबाई के त्याग को उन्होंने सामने रखा ही था। 'झाँसी की रानी' की समाधि पर' शीर्षक कविता में भी वे रानी की समाधि के बहाने देश की तरुणाई को मातृभूमि के प्रति त्याग, बलिदान और अपने आप को न्यौछावर करने की प्रेरणा देती हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान की 'राखी की चुनौती', 'राखी' तथा 'पुरस्कार कैसा?' शीर्षक कविताएँ भी आह्वानपरक कविताएँ हैं, मुक्ति के आकांक्षा की कविताएँ हैं। 'पुरस्कार कैसा?' में वे देशवासियों का आह्वान करती हैं, भाई को संबोधित करते हुए वे उससे माँ की मुक्ति की चाह रखती हैं। उन्होंने लिखा है –

आज तुम्हारी लाली से, माँ के मस्तक पर हो लाली।
काली जंजीरें टूटें, काली जमना में हो लाली।।
जो स्वतंत्र होने को हैं, पावन दुलार उन हाथों का।
स्वीकृत है, माँ की वेदी पर पुरस्कार उन हाथों का।।[9]

कृष्ण को हिन्दी साहित्य में अनेक रूपों में चित्रित किया गया है। कृष्ण और सुभद्रा के अटूट सम्बन्ध को भला कौन नहीं जानता। मातृभूमि की मुक्ति की चेतना से अनुप्राणित सुभद्रा कुमारी चौहान 'राखी' शीर्षक कविता में कृष्ण को भाई मानकर देश की रक्षा हेतु राखी भेजती हैं। उन्हीं के शब्दों में –

भैया कृष्ण! भेजती हूँ मैं राखी अपनी, यह लो आज।
कई बार जिसको भेजा है सजा–सजा कर नूतन साज।
लो आओ भुजदण्ड उठाओ, इस राखी में बँध जाओ।।[10]

इसी प्रकार उन्हें वीर राजपूतों की, राजस्थान की राखी से जुड़ी उस कथा का भी स्मरण कराती हैं जिसमें शत्रु भी राखी की लाज रखने के लिए दौड़ा चला आया था; उन्हें देश की, देश की बहनों की विवशताओं से परिचित कराती हैं और आह्वान करती हैं उनका कि ऐसे समय में जब कि स्थितियाँ अत्यन्त विषम एवं पीड़ादायक हैं तब– 'ऐसे समय दौपदी – जैसा/कृष्ण सहारा है तेरा।'[11]

और इसी सहारे की चाहत रखते हुए प्रश्न करती हैं कि –

बोलो सोच–समझकर बोलो,
क्या राखी बँधवाओगे ?
भीर पड़ेगी, क्या तुम रक्षा –
करने दौड़े आओगे ?
यदि हाँ तो यह लो मेरी,
इस राखी को स्वीकार करो।
आकर भैया, बहन 'सुभद्रा' –
के कष्टों का भार हरो।[12]

और हम सब जानते हैं कि सुभद्रा जी का कष्ट देशवासियों के कष्ट से अलग नहीं था, सुभद्रा जी की चाहत देशवासियों की चाहत से अलग नहीं थी। उनके लिए सबसे बड़ा कष्ट यही था कि उनका देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था और उस गुलामी के चलते देशवासी अनेकानेक अन्यायों एवं अत्याचारों के शिकार हो रहे थे।

सुभद्रा कुमारी चौहान का महत्त्व इसलिए भी है कि वे राष्ट्रीय भावनाओं को दृढ़ करने में जितनी दत्तचित्त थीं उतनी ही वे इस बात के प्रति भी सचेत थीं कि इस राष्ट्रीय भावना की स्थापना, इस राष्ट्रीय मुक्ति की चाह के बीच हम अहिंसक न बन जाएँ और ऐसा इसलिए था, क्योंकि वे गाँधीवादी दृष्टिकोण की हिमायती थीं। वे अपने गीतों से जन–जन में उत्तेजना, जोश, बेचैनी पैदा कर देती थीं। हम कह सकते हैं कि तत्कालीन महिला लेखिकाओं में वे सर्वाधिक मुखर कवयित्री थीं, लेकिन उनका महत्त्व इसलिए है, क्योंकि भावना और ओजस्विता के बीच भी वे संयम को अनिवार्य मानती थीं। इसीलिए उनके सृजन का एक मूलमंत्र जहाँ यह था कि –

जरा सुलग जाने दे चारों दिशि कुरबानी की आगी।[13]

वहीं यह भी थी –

हम हिंसा का भाव त्याग कर विजयी, वीर अशोक बनें।[14]

संदर्भ :

1. सुभद्रा कुमारी चौहान : 'झाँसी की रानी', मुकुल, पृ. 58
2. सुभद्रा कुमारी चौहान : 'झाँसी की रानी', मुकुल, पृ. 48
3. वही, पृ. 57
4. वही, पृ. 58
5. सुभद्रा कुमारी चौहान : 'मत जाओ', मुकुल, पृ. 104
6. सुभद्रा कुमारी चौहान : 'स्वागत', मुकुल, पृ. 98
7. सुभद्रा कुमारी चौहान : 'विजयादशमी', मुकुल, पृ. 77
8. वही, पृ. 78
9. सुभद्रा कुमारी चौहान : 'पुरस्कार कैसा ?', मुकुल, पृ. 109
10. सुभद्रा कुमारी चौहान : 'राखी', मुकुल, पृ. 70
11. वही, पृ. 72
12. वही, पृ. 72
13. सुभद्रा कुमारी चौहान : 'पुरस्कार कैसा ?', मुकुल, पृ. 110
14. सुभद्रा कुमारी चौहान : 'स्वागत', मुकुल, पृ. 98

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
महिला पी.जी. महाविद्यालय,
जोधपुर (राजस्थान) – 342005 मोब. 09468557781